उपसंहार

- उपसंहार -

हिंदी साहित्य के बहुचर्चित साहित्यकार मन्नू भण्डारी एक प्रतिभासंपन्न साहित्यकार है। हिंदी साहित्य में उनका काफी योगदान रहा है।

मन्नू भण्डारी एक प्रतिभाशाली लेखिका है। उनकी प्रतिभा कारयत्री तथा भावयत्री प्रतिभा दोनों रसों में उभर आयी है। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं में लेखन किया है। उनका साहित्य अनेक भाषाओं में अनूदित हुआ है। कई कहानियों पर फिल्में बनी हैं।

राष्ट्रप्रिय, साहित्यिक सुखसम्पतराय की छोटी बेटी मन्नू भण्डारी देशभक्ति से ओतप्रेत है। उनके व्यक्तित्व निर्माण में माता-पिता और गुरूजनों का बहुत महत्त्व है। अध्ययन क्षेत्र में रूचि रखनेवाली मन्नूजी का विवाह ख्यातकीर्त लेखक राजेन्द्र यादवजी के साथ सम्पन्न हुआ। सौम्य और समझौतावादी पत्नी की भूमिका निभानेवाली मन्नू भण्डारी का दाम्पत्यजीवन विवाह को लगभग ३८ साल होने के बाद भी पूर्णतया आनंदमयी है। उन्होंने अपने आस-पास के माहौल में जो देखा-परखा और अनुभव किया वहीं अपनी लेखनी द्वारा उद्घाटित करने का प्रयास किया है। वे साहित्य सृजन में काफी सफलता पा चूकी हैं। अतः सिद्ध है कि वे एक ख्याति प्राप्त लेखिका हैं।

मां-बाप के अतिरिक्त अहं के बीच बंटी जैसा बेगुनाह बच्चा किस तरह बलि का बकरा बन जाता है इसका सुन्दर और यथार्थ चित्रण लेखिकाने किया है। पूरी कथा नायक बंटी के इर्द-गिर्द मँडराती है। बंटी की कथा मुख्य कथा है। इस मुख्य कथा के पुष्टि देने के लिए अनेक सहायक कथाओं का अन्तर्भाव प्रस्तुत उपन्यास में किया है। उनमें शकुन की कथा, अजय की कथा, डॉ.जोशी की कथा, वकीलचाचा की कथा, फूफी की कथा, मालीदादा की कथा, बंटी के दोस्तों की कथा, टीटू के अम्मा की कथा, डॉ.जोशी के बच्चों की कथा है। कथानक में सहजता एवं रोचकता

होने के कारण पाठक उपन्यास जिज्ञासावश पढ़ता चला जाता है। उपन्यास की कथावस्तु अत्यन्त सुन्दर, सुगठित, प्रभावशाली, मौलिक, सांकेतिक, जीवनानुभूति से जुड़ी, समस्त जीवन को रेखांकित करनेवाली, जीवन का मूल्यांकन करनेवाली, कौतुहलवर्धक एवं रोचक बन पड़ी है।

लेखिकाने लगभग ३५ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष पात्रों का चयन किया है। इन पात्रों में से बंटी प्रमुख पात्र है। इनके अलावा शकुन-अजय, डॉ.जोशी, वकीलचाचा, फूफी आदि सहायक पात्र है। हीरालाल मालीदादा, बन्सीलाल, टीटू की अम्मा, मिसेज कौशिक, मिसेज सक्सेना, दीपाआन्टी, कैलाश, विभू, जोत, अमि, टीटू, शन्नो, कुन्नी आदि गौणपात्र तथा नामनिर्देशित पात्रों का समावेश किया है। इसके साथ-साथ चरित्र-चित्रण की विशेषता एवं विधियों को भी स्पष्ट किया है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक बंटी मां-बाप के अतिरिक्त अहं के कारण बलि का बकरा बन जाता है। मां-बाप के प्यार, स्नेह से वंचित वह "समस्याबालक" बन जाता है। "एबनॉर्मल" बनने के कारण वह किसी परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता।

अजय-शकुन के माध्यम से आधुनिक पति-पत्नी का यथार्थ चित्रण हुआ है, जो अपना अहं, स्वाभिमान को एक-दूसरे के सामने झूकना मान्य नहीं करते। आलोच्य उपन्यास में डॉ.जोशी के माध्यम से समझदार, प्रेरणादायी, व्यवहारों में स्थितप्रज्ञ तथा वकीलचाचा के माध्यम से धीर-गम्भीर, दृढनिश्चयी मनुष्य का चित्रण किया है। फूफी के चरित्र द्वारा कर्तव्यपरायण, मातृवत्सल्य नारी का चित्रण किया है। मीरा के रूप में एक सामान्य नारी का चित्रण किया है, जो घरगृहस्थी में आनंद लेती है।

संवाद और भाषाशैली में लेखिका ने काफी सफलता पायी है। कथोपकथन के अन्तर्गत उन्होंने व्याख्यात्मक, व्यावहारिक, नाटकीय, मार्मिक, हास्य-व्यंग्यात्मक, गम्भीर, अलंकारिक, कथोपकथन का आयोजन किया है। इसके अंतर्गत संक्षिप्त, चुटीले, मर्मस्पर्शी

तथा नाटकीय संवादों का आयोजन किया है। तथा इसके साथ-साथ भाषाशैली के अन्तर्गत पात्रानुकूल भाषा, चित्रात्मक भाषा, अलंकारों, कहावतों, मुहाँवरों, लोकोक्तियों से युक्त भाषा का प्रयोग किया है। इस उपन्यास के संवाद कथानक को गतिशील बनाते हैं। इसमें कई शैलियों का प्रयोग किया गया है। इन सभी की वजह से उपन्यास के संवादों की सहजता में निखार आ गया है। देशकाल तथा वातावरण में आंतरिक वातावरण तथा बाहय वातावरण सम्बन्धी चित्रण का मूल्यांकन भी किया है।

उपन्यास का शीर्षक संक्षिप्त और रोचक है। प्रमुखपात्र के आधार पर उसका शीर्षक रखा है। उपन्यास में उद्देश्य का होना आवश्यक और महत्वपूर्ण है। पति-पत्नी की अतिरिक्त अहं भावना, एक-दूसरे के आपसी सम्बन्धों में ना समझी के घातक एवं दुष्परिणाम को चित्रित करना लेखिका का उद्देश्य रहा है। अतः अपने उद्देश्यपूर्ति में मन्नू भण्डारी काफी सफलता पा चुकी है।

शकुन के माध्यम से आधुनिक नारी की मानसिकता, विवशता का यथार्थ चित्रण करके मन्नूजी ने हमें यह दिखाने का प्रयास किया है कि आज नारी शिक्षित हो चुकी है, आत्मनिर्भर हो चुकी है। फिर भी हमारे पुरूषप्रधान समाज में उसे उचित स्थान नहीं मिल रहा है। पुरूषी अहं उसे दबाने में गौरव अनुभव करता है। शिक्षित, स्वावलंबी शकुन अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकती। उसका पति उसे गुलाम की तरह रखने में आनंद अनुभव करता है। इस कुचक्र से छुटकारा पाने की कोशिश करनेवाली शकुन डॉ.जोशी के साथ नई जिन्दगी शुरू करती है, मगर बंटी की समश्या नये रूप में उसके सामने उपस्थित होती है। नये घर से मेल न खानेवाला बंटी होस्टल में रहने को विवश होता है। प्रस्तुत उदाहरण के द्वारा लेखिका स्पष्ट करना चाहती है कि भारतीय परिवेश में रहनेवाली नारी प्रथम पति और पारिवारिक जीवन को लाख कोशिश करने के बावजूद भी भूल नहीं सकती। शकुन इसी भावना का शिकार होने के कारण अजय को नीचा दिखाने के हेतु से डॉ.जोशी के साथ घर बसाती है। लेखिकाने नयी मानसिकता, परिस्थिति से बनती-टूटती नारी की झाँकी प्रस्तुत करते हुए

स्पष्ट किया है कि पति-पत्नी के आपसी समन्वय घर को स्वर्ग बना सकता है।

लेखिकाने बंटी के माध्यम से बालमन की मनोवैज्ञानिकता को स्पष्ट किया है। बच्चे के जीवन में मां-बाप के प्यार, स्नेह और उचित वातावरण का कितना महत्व हेता है इसका चित्रण बंटी के माध्यम से स्पष्ट किया है। पति-पत्नी का तनाव बच्चों के जीवन में दुःख की स्थिति निर्माण करता है। खण्डित परिवार के बच्चे एबनॉर्मल बनते है, इसकी ओर लेखिकाने ध्यान आकर्षित किया है।

मन्नूजी ने नारी जीवन की समस्या , सामाजिक समस्या, आर्थिकसमस्या, मानसिकसमस्या आदि का मार्मिक चित्रण किया है। इन समस्या को स्पष्ट करने के प्रयास में वह अपने उद्देश्य की पूर्ति कर चूकी है। पति-पत्नी का अतिरिक्त अहं जन्नत जैसे सुखी परिवार को किस तरह रेगीस्थान बनाता है उसका मार्मिक चित्रण लेखिकाने किया है। इस प्रकार यथार्थ के रंग में डूबोकर प्रस्तुत करनेवाला यह उपन्यास सभी दृष्टि से सफल कहा जा सकता है। अनुसन्धान के प्रारम्भ में मेरे सामने जो प्रश्न उपस्थित थे उन सभी प्रश्नों के उत्तर मुझे मिल गये हैं। उनका उल्लेख लघु-शोध प्रबन्ध के पाँच अध्यायो में दिया है। उपसंहार में इनका केवल संकेत मात्र दिया है। अध्ययन करने के बाद मैं अनुभव करने लगी हूँ कि निम्नलिखित विषयों को नयी दृष्टि से प्रकाशित किया जा सकता है।

<u>अनुसंधान की नयी दिशाएँ</u> :-

(१) मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में बालमनोविज्ञान।

(२) बालमनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मन्नू भण्डारी का स्थान।

(३) हिंदी के बालमनोवैज्ञानिक उपन्यास।

(४) मन्नू भण्डारी के साहित्य में चित्रित समस्याएँ।

उक्त विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है।